Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

दलित उत्कर्ष का यथार्थ दस्तावेज:'बीस बरस'

(उत्तर-आधुनिकता के सन्दर्भ में)

डॉ.अमितभाई एन. पटेल*

आधुनिकतावादी वास्तविक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विभिन्नताओं का ख्याल भी नहीं रखते। इस प्रकार उत्तर आधुनिकता उन पक्षों की चिंता करती है जिन्हें आधुनिकता ने तार्किक सभ्यता, व्यवस्था या विकास के नाम पर या तो समाप्त कर दिया या विकृत कर दिया या फिर 'अप्रस्तुति योग्य' घोषित कर दिया।आधुनिकता एक जीवन प्रणाली के समान समकालीन समय से जुड़कर मानवीय मूल्यों की उद्भावक बन गयी थी । एक इतिहास क्रम में नव जागरण और समकालीन विचार आधुनिक के प्रवाह से अस्तित्व में आए । बदले हुवे समय में समकालीन विचारधाराओं में नया चिंतन आरम्ब हुआ । किवेन्टन स्किन्नर ने मानव विज्ञान की महान अवधारणा की वापसी के सन्दर्भ में यह कहा है कि यह उत्तर आधुनिकता का युग है । उत्तर आधुनिकता फिल्म से लेकर फैशन तक, साहित्य से संस्कृति तक, कामशास्त्र से कॉमिक्स तक और विज्ञान से विज्ञापन तक हर वस्तु को प्रभावित कर रही है । दर्शन,समाज और मीडिया सब इसके दायरे में है । 'तार्किकीकरण' (Rationalization) का विरोध उत्तर आधुनिकता इसकी वर्चस्ववादी, शोषणकारी, सर्वसत्तावादी और जीवन रस को सोखने वाली प्रवृत्ति के कारण करती है। उत्तर आधुनिकता ऐसी व्यवस्था का विरोध करती है जो 'शोषण'या 'केंद्रीयता' पर आधारित हो। यही कारण है कि ल्योतार ऐसे बड़े वृत्तान्तों (महावृत्तान्तों) को स्वीकार नहीं करते जो अभी तक हमारे जीवन को संगठित करते आए हैं ।

उत्तर आधुनिकता में आधुनिकता के साथ उत्तर उपसर्ग लगाकर उत्तर आधुनिकता शब्द बना है। इसकी व्याख्या दो अर्थों में की जा सकती है। एक तो है, आधुनिकता का उत्तर अर्थात विरोध तथा दूसरा है आधुनिकता का उत्तर पक्ष। यदि इसे आधुनिकता की अगली कड़ी या अगला सोपान कहें तो अनुचित न होगा। आप उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता की पुनर्परिभाषा भी कह सकते हैं । उत्तर आधुनिकता में आधुनिकता के अनेक तत्त्वों को खारिज किया गया और बदलती सामाजिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक स्थितियोंके प्रकाश में कुछ अन्य आधुनिक मान्यताओं को पुनर्परिभाषित किया गया है।

---

* डॉ.अमितभाई एन. पटेल , जीएलएस (सद्गुणा एण्ड बी.डी.) कॉलेज फॉर गर्ल्स, अहमदाबाद।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

उत्तर आधुनिकता कि अभिव्यक्ति साहित्य में व्यापक रूप से हुई है । वास्तव में आज समाज में शक्ति और सत्ता के केन्द्र के बीच मोहभंग कि स्थिति है । आज का रचनाकार एक प्रकार के अलगाव के बीच यथार्थ की दुनिया की तलाश करता है और अपने आत्मनिर्वासन और आत्महत्या से संघर्ष करता है । वह दोस्तीव्स्की हो, काफ्का हो, या मक्सिम गोर्की हो, या रिम्बो हो । संसार की गति बहुत तेज़ है । अब कहीं नायक नहीं है सब जगह प्रतिनायक है । आधुनिक कलाकार का आत्मसंघर्ष ही उसके सृजन का आधार है । बीसवीं शताब्दी में विश्व इतिहास के एक युग का अंत सा हो गया है ।इस दुनिया में मनुष्य अनेक रूपों में बँटा हुआ यातना भोग रहा है । उसकी व्यथा और सपनों का कई अंत नहीं है।

भारत के इतिहास में दलित, आदिवासी एवं स्त्रियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। किन्तु गलत इतिहासबोध के कारण लोगों ने दलितों, आदिवासियों और स्त्रियों को इतिहासहीन मान लिया है। वे इतिहासवान है,सिर्फ जरुरत दलितों और स्त्रियों द्वारा अपने इतिहास को खोजने की है। डॉ. आंबेडकर पहले भारतीय इतिहासकार है जिन्होंने इतिहास में दलितों की उपस्थिति को रेखांकित किया है। दलित रचनाकार इन बिंदुओं को पकड़कर अपनी रचना के द्वारा समाज के सामने रख रहा है। इतिहास बताता है कि आर्य लोगों ने बाहर से आकर इस देश के मूलनिवासियों यानी अनार्यों पर कब्जा कर लिया था। अनार्य और कोई नहीं बल्कि इस देश के दलित और पिछ़डे वर्ग के लोग थे। आर्य ने राजनीति, सत्ता, अर्थ, ज्ञान, विज्ञानपर अपना प्रभुत्व जमा लिया था। शक्तिशाली बन गए थे। यहाँ के मूलनिवासों यानी अनार्यों को विकास करने का मौका नहीं दिया था। आज भी उनकी संताने वही संताप भोग रही है।आज का दलित डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के कार्य और विचारों के कारण अपना इतिहास स्वयं जान रहा है और लिख रहा है। इसी कारण दलित उपन्यास में हमें इतिहास बोध होता है। दलित साहित्य सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधारपर विकसिक हो रहा है। उसने अपना अलग रचना संसार निर्मित किया है, जो हमें अपने इतिहास संस्कृति और सभ्यता के विभिन्न पक्षों से अवगत कराती है। क्योंकि दलित वर्ग की संस्कृति एवं सभ्यता सबसे पुरानी है। उसका अहसास आज के दलित उपन्यासों में बराबर हो रहा है। "द्रोणाचार्य ने एकलव्य से अंगुठा क्या इसलिए माँगा कि धनुष्य विद्या में वह और भी प्रवीण न हो जाये? क्या द्रोणाचार्य गुरु होकर भी नहीं चाहते थे कि एकलव्य जैसा शिष्य उतनी प्रगति न करें कि उसके अपने शिष्य पीछे रह जाये। इस संदर्भ से यह स्पष्ट है कि दलित समाज के साथ हमेशा षडयंत्र रचा गया है ताकि वो आगे ना आये। आज के युग में द्रोणाचार्य अंगुठा नहीं काटेगा बल्कि अंक काटेगा, यह इतिहास बोध दलितों का है। हिंदी दलित उपन्यास का इतिहास बोध उन्हें अपनी संस्कृति और सभ्यता से परिचित करता है तो दूसरी ओर

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

तथाकथित भारतीय संस्कृति, वैदिक संस्कृति यानी हिंदूवादी संस्कृति के मानवता विरोधी चरित्र को उद्घाटित करके समस्त इतिहास और परंपरा को नकार देती है। दलितों के इतिहास में दलित महिलाओं का भी बहुत बडा योगदान रहा है इस बात को भी हर हिंदी दलित उपन्यास में देख सकते है।

हिंदी दलित उपन्यास का मुख्य सरोकार अपनी संस्कृति, परंपरा और इतिहास में अपनी पहचान तथाअपनी अस्मिता की खोज करना जो समानता, बंधुता व स्वतंत्रता जैसे जनतांत्रिक मूल्यों पर आधारित है।दलित साहित्य का समाज बोध पाठक और श्रोता की चेतना एवं अनुभूति को प्रभावित करनेवाली गहन संवेंदना से ही पूरा होता है। हिंदी दलित उपन्यास यह सामाजिक सरंचना की तह में जाकर पूरे समाज की न केवल पड़ताल करता है बल्कि उसमें छुपी हुई विसंगतियों को उजागर कर उसके प्रतिकार और परिष्कार का प्रयत्न भी करते हैं। हिंदी दलित उपन्यास का इतिहास एवं समाज बोध मुख्यधारा से बिल्कुल भिन्न है। वो मानवीय श्रम को ही सौंदर्य और व्यवस्था की अन्यायपूर्ण विसगंतियों से मुक्ति को ही अपना सामाजिक सरोकार और अपनी समाजिकता मानता है उसके केंद्र में केवल और केवल मनुष्य व मनुष्यता है।हिन्दी के दलित एवं गैरदलित लेखकों ने दलितों-पीड़ितों-शोषितों की व्यथा का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में किया है । उन्होंने न सिर्फ दलितों की व्यथा एवं पीड़ा का चित्रण किया है बल्कि दलितों के उत्कर्ष की गाथा भी गायी है । अर्थात आज दलित समाज अपने पर हुए अत्याचार का विद्रोहात्मक रूप से उसका प्रतिकार एवं विरोध कर रहा है । डॉ.बाबा साहब के विचारों पर चलकर आज दलित समाज एकजूट होकर शोषण के खिलाफ आवाज़ उठा रहा है ।

रामदरश मिश्र ने भी अपनी रचनाओं में दलित-पीड़ित-शोषितों की वेदना का यथार्थ चित्रण करके दलितों के विद्रोहात्मक स्वर को भी मुखरित किया है उनकी रचनाएँ. उनके असाधारण पुरुषार्थ, दृढ़ मनोबल एवं अनुशासित कार्यप्रणआली का परिणाम है । । मिश्र जी समकालीन युग के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार हैं । मिश्र जी ग्रामीण परिवेश के अग्रणी रचनाकार है । उनका उपन्यास साहित्य ग्रामीण परिवेश के बहुआयामी चित्रण का दस्तावेज है । ग्रामीण जीवन का वास्तविक और यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में मिश्र जी को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है । सन् 1961 से सन् 1999 के बीच लिखे गए उनके ग्यारह उपन्यास हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ उपलब्धियाँ हैं । मिश्र के प्रमुख उपन्यास है - 'पानी के प्राचीर'(1961), 'जल टूटता हुआ'(1969), 'बीच का समय'(1970), 'सुखता हुआ तालाब'(1972), 'रात का सफर'(1976), 'अपने लोग'(1976), 'आकाश की छत'(1979), 'बिना दरवाजे का मकान'(1983), 'दूसरा घर'(1994), 'बीस बरस'(1996), 'थकी हुई सुबह(1999) ।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में भारतीय गाँव के संबंधों, मूल्यों के तनाव, विघटन, उसके जीवन-संघर्षो एवं व्यथा की कथा है । भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के उपन्यासों में हुआ है । वे जीवनगत परिवेश के प्रति अत्यंत संवेदनशील रहे हैं । रामदरश मिश्र की सभी रचनाएँ घटित-घटनाओं के आधार पर हैं । ये घटनाएँ ग्रामीण परिवेश की हैं । उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह समाज के अनुभव जगत से सीधे जुड़ा है । बचपन से ही ग्राम-जीवन से उनका संबंध रहा है, जो कुछ अनुभव किया है, उसका स्पष्ट चिंतन उन्होंने अपनी कृतियों में किया है । मिश्र जी ने प्रधान रूप से भारतीय ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया हैं, वे गाँव से ही बने हैं, उन्हें गाँव नेही निर्मित किया है, वे कहते हैं - **" मेरा गाँव न जाने कितने स्तरों पर मुझमें है, न जाने कितने स्तरों पर उसने मेरा निर्माण किया है, नजाने उसके वर्तमान और अतीत की कितनी जीवन-धाराएँ मुझमें जाने-अनजाने अपना वेग और प्रभाव छोड़ती गई हैं । न जाने उसके जीवन के बीहड़ जंगल में जीवन चरित्रों के कितने पेड़ खड़े थे जो मेरे अनुभवों में और मेरे रचना जगत में समाते गए हैं । मेरा गाँव उस पूरे जवार में अपने चरित्रों के कारण बहुत सुख्यात या कुख्यात था ।'१**

'बीस बरस' मिश्र जी का सन् 1996 में प्रकाशित उपन्यास है । इसमें ग्रामीण यथार्थ के एक अलग आयाम के साथ-साथ दलित समाज का उत्कर्ष भी विद्यमान है । मिश्र जी ने इस उपन्यास में कथाप्रवक्ता पत्रकार दामोदर के माध्यम से नये गाँव के जीवन यथार्थ की पहचान करवाई है । गाँव से आकर दिल्ली शहर में रचने-बसने पर भी दामोदर शर्मा अपने गाँव को भूलते नहीं है । दिल्ली में रहते हुए शायद ही कोई दिन बीता होगा, जब उन्हें अपने गाँव की याद न आई हो । दिल्ली में काम की व्यस्तता के कारण दामोदर को अपने गाँव जाने का वक्त ही नहीं मिलता है । किन्तु एक दिन अपने भतीजे मंजुल के साथ बीस साल बाद मोटर साइकिल पर गाँव जाते है । जाते समय अतीत की तमाम स्मृतियाँ दामोदर के भीतर उभर आती है ।दिल्ली में सुख-सुविधाओं मे रहने वाले दामोदर का गाँव की दुखदाई, कमर-तोड़ सड़कों से पाला पड़ता है ।इससे वह आहत होता है । किन्तु दलितों एवं पिछड़ी जाति में आयी जागृतता देखकर उसे खुशी भी होती है । बीस साल पहले पिछड़ी जाति के लिए गाँव में शिक्षा के कोई प्रबंध नहीं थे, या यह कहे तो दलित-पीड़ितों को पढ़ने का कोई अवसर ही नहीं दिया गया था । पत्रकार दामोदर शर्मा को लगता है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भी पिछड़ी जाति का जितना विकास होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ । लोकिन दो स्तरों पर हुआ परिवर्तन उन्हें आश्वस्त करता है। एक तो हरिजनों, दलितों में अधिकारों की चेतना और दूसरा नारियों में मुक्ति की छटपटाहट । इन दो परिवर्तनों से दामोदर शर्मा के प्रगतिशील मन को सुख मिलता है । आज गाँवों में शिक्षा का स्तर पहले से कई गुना अधिक

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

बढ़ा है । सुखदेव की भानजी पवित्रा, बसंता हरिजन और हनुमान भाई के रूप में गाँव का मानसिक बदलाव सामने है । हरिजन की लड़की पवित्रा पढ़ाई करके अध्यापिका बन जाती है । हरिजन टोले की पढ़ी-लिखी पवित्रा खुद को तंग करने वाले ऊँची जाति के लड़कों माधो-साधो को ललकारती है - **"चोउप सूअर की ओलाद '। ..... मैं तुम्हारी भानजी हूँ लफंगो । जब से आयी हूँ तुम्हारी कीर्ति सुन रही हूँ आज तुम्हें देख भी लिया । .....कमीनो, तुम लोग अपने-अपने रास्ते चले जाओ, नहीं तो ठीक नहीं होगा..... उसने देखा उसके आसपास कुछ ईंट पड़ी हैं, उठाकर ताबड़तोड़ मारना शुरू किया.....।"२** इसप्रकार पवित्रा दलित नारी शक्ति का पर्चा दिखाती है ।

ऊँची जाति के पुरुष हमेशा निम्न जाति की नारियों का शोषण करते रहे है । वे ऐसी नारियों को भोगविलास की वस्तु मानते है । यह परंपरा नयी नहीं है, सदियों पुरानी है । किन्तु आज ऐसी नारियाँ निडरता से इसका विरोध कर रही है । 'बीस बरस' की पवित्रा कथित-उच्च जाति के लफंगों से ड़रती और दबती नहीं है । वह दामोदर से कहती है - **" नहीं अंकल, ये मेरा कुछ नहीं कर सकते थे । उन्हें मैंने सबक सिखा दिया होता । किसी दिन सिखा भी दूँगी । अब वे दिन गये जब ऊँची जाति के लफंगे हमें अपने इस्तेमाल की चीज समझते थे ?"३** उच्च वर्ण के लोग दलितों का हर प्रकार से शोषण करते है । ऐसे लोग पहले निम्न जाति के लोगों को पैसे देते है, फिर कर्जे के नाम पर उसका शोषण करते है । किन्तु आज के निम्न जाति के दलित अपनी मेहनत पर विश्वास रखते है । अपनी मेहनत की कमाई से पेट भरते है । मिश्र जी ने दलित समाज में आये इस बदवाल को भी प्रस्तुत उपन्यास में चरितार्थ किया है । अपनी मेहनत पर भरोसा रखनेवाला वसंत अंगदभाई को दिये हुए वादा का उल्लंघन करके सभापति के यहाँ काम करने जाता है तो दामोदर उसे अंगदभाई के यहाँ काम पर जाने की सलाह देते है । तब वसंत उत्तर देता है - **"बुरी हो या भली, अब जहाँ जा रहा हूँ, जाऊँगा । किसी का कर्जा नहीं न खाया है ।"४**

मिश्र जी ने अपने इस उपन्यास में दलित-पीड़ित-शोषितों के विद्रोह-आक्रोश का यथार्थ चित्रण किया है । आज दलित-आदिवासी शोषण का प्रतिकार कर रहे है । तथा सवर्णो की मानसिकता का, अत्याचार का आक्रोश एवं विद्रोहात्मक रूप से तर्कसंगत विरोध भी कर रहे है । सुखदेव के शब्दों से पता चलता है कि यह विद्रोह भावात्मक प्रतिक्रिया न होकर स्थितियों की समझ और अधिकारों की प्राप्ति की आकांक्षा से पुष्ट और प्रेरित है - **"हम लोग उनके सामने छोटे बने रहें, घुटने टेके रहें, रिरियाते, बिलबिलाते रहें । मैं अपने लोगों को सिखाता हूँ कि तुम किसी से छोटे नहीं हो । तुम लोग अपनी मेहनत की कमाई खाते हों फिर किसी के आगे झुकने का क्या मतलब ? वे भी इंसान है, तुम भी इंसान हो । तुम्हें सारे इंसानी**

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

हक मिलने ही चाहिए । अपने बच्चों को पढ़ाओ-लिखाओं और स्वाभिमान से जियो ।"५ मिश्र जी ने रूढ़ सवर्ण मानसिकता का भ खुलासा किया है जो दलित चेतना के उभार को सहन नहीं कर पा रही है । सवर्ण लोग दलितों में आयी जागृतता से जलते है । इसीलिए सुखदेव सजातियों को सावधान करते हुए कहता है **- "ये ऊँची जातियों के तमाम लोग बहुत छोटा होने के बावजूद बिलावजह तुम्हारे सामने बड़ा होना चाहते हैं और चाहते है कि तुम उनके अत्याचारों के बावजूद उनके सामने झुके रहो, उनका सजदा किया करो ।"६** दलित समाज को सवर्ण जाति के लोग सदियों से दबाते-कुचलते आये है । दलित समाज सवर्ण जाति के आतंक के छाये के नीचे ड़र-ड़र कर जीवन जीता है । किन्तु आज का दलित ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख गया है । इसीलिए तो सुखदेव दामोदर को कहता है - **"सर हम लोग तो खुद ही आतंक में जीते रहे हैं और जी रहे हैं, किसी के लिए क्या आतंक बनेंगे ? हाँ, आज थोड़े जगे हैं और अपनी अस्मिता के प्रति सचेत हुए हैं तो लोगों को हम आतंक दिखाई दे रहे हैं । लोगों की मानसिकता नहीं बदली है, इसलिए हमारे बदलाव को वे भतर से पचा नहीं पाते हैं और टकराहट का मौका देते हैं ।"७**

मिश्र जी का मानना है कि हरिजनों की पीड़ा को वही ठीक से समझ सकता है, जिसने उनके जैसी यातना भुगती हो । जब मंजुल उनके अशिष्ट होने की चर्चा करता है तब दामोदर शर्मा हरिजनों के अवलोकन बिंदु से इस समस्या पर विचार करते है- **"अरे बाबा, जब हम उन्हें आदमी मानने से भी इंकार करते हों तो वे हमें प्रणाम क्यो करें । वे अपने घर में या घर के सामने चारपाई पर आराम कर रहे हैं, अपनी थकान मिटा रहे हैं तो वहाँ से बार-बार गुजरते हुए बड़े लोगों को देखकर चारपाई पर से क्यों उठें ?"८** दलित पढ़-लिखकर कलेक्टर या एम.एल.ए. भी बन जाये किन्तु उसकी जाति हमेशा परछाई बनकर उसके इर्द-गिर्द घुमती रहती है । हनुमान ठाकुर एम.एल.ए. होने के बावजूद सवर्ण मानसिकता का तिरस्कार झेलते हैं - **"उनकी बातों से आपको ऐसा लगेगा कि मुझे न शिक्षा में आना चाहिए था, न विधानसभा में । मुझे अपने बाप-दादों की तरह पालकीं ढ़ोनी चाहिए थी, घरों का पानी भरना चाहिए था, भार ढ़ोना चाहिए था, जूठे पत्तल साफ करने चाहिए थे और गाहे-बगाहे पिटना चाहिए था ।"९**यह आक्रोश अपने आपमें उस पूरे घिनौने अतीत को समेटे हुए है जिसकी प्रतिक्रिया में आज दलित-विद्रोह उग्र और आक्रमक दिखायी देता है । जब अंगदभाई हनुमान ठाकुर को कहता है कि तुम्हीं लोग सबको गाली देना या लड़ाई करना सिखाते हो । तब हनुमान ठाकुर अंगदभाई को फटकारते हुए कहता है- **"अंगदभाई, जब बड़ी जातियों के लोग अपना बड़प्पन नहीं दिखायेंगे तो नीचे गिरे हुए लोगों से कैसे उम्मीद करेंगे कि वे हमेशा उनका सम्मान करते रहें । अब नीचे गिरे हुए लोग उठे रहे हैं सँभल रहे हैं, आदमी**

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

की तरह जीने का अपना हक माँग रहे हैं, तब उन्हें आप सहारा देने के बदले कोसेंगे तो वे क्यों आपका सम्मान करेंगे ।"१०

मिश्र जी ने पवित्रा और वंदना के रूप में गाँव की नारी का नया रूप अंकित किया है । साथ ही गाँव में जन्म ले रही नारी-चेतना को चित्रित करने का भी प्रयास किया है । वंदना स्त्रियों के दुख-दर्द की लड़ाई में इतनी गहरी कोशिश के साथ कूद पड़ी है कि बड़े-बड़ों के कान काटती है । जब बलदेव की पत्नी को उसके सास-ससूर तथा उसका पति बलदेव-तीनों मिलकर पीट रहे होते हैं तो वह यह नहीं देख सकती और बलदेव के माँ-बाप के आगे वह तनकर खड़ी हो गयी और कहने लगी - **"आपको एक औरत को पशु की तरह मारने-पीटने का अधिकार किसने दिया है ? यह आपकी बहू जरूर है लेकिन उससे पहले एक आदमी है । इसे भी आदमी की तरह जीने का अधिकार है । ..... बेशर्मी की भी इंतहा होती है । मैं आपके चचेरे पुत्र की ब्याहता बहू हूँ और किसी का दिया नहीं खाती? तन कर जीने की सलाह दे रही हूँ । यह वधू गाय की तरह कायर न होती तो दिखा देती कि जुल्म क्या होता है ।"११**

समीक्ष्य उपन्यास मे मिश्र जी ने दहेज की समस्याको भी उभारा है । काशीनाथ चाचा की लड़की की शादी में समधी ने तिलक पर मोटर साइकिल की मांग की थी । और कहा था कि अगर मोटर साइकिल नहीं मिलेगी तो बारात यहाँ नहीं आयेगी । इसीलिए सुभाष कहते है कि - **"साला कह रहा है कि मैंने कुछ माँगा ही नहीं । अरे काशी चाचा ने अपने जीवन भर का बचाया हुआ पैसा इस शादी में झोंक दिया, फिर भी तिलक पर मोटर साइकिल नहीं चढ़ी तो नाराज हो गया था । धमकी दी थी कि मोटर साइकिल नहीं पहुँची तो बारात नहीं आयेगी ।"१२**मिश्र जी ने इस उपन्यास में उपर्युक्त समस्याओं के साथ-साथ शिक्षा-संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्ट्राचार एवं राजनीतिक दखल का भी पर्दाफाश किया है । गाँव की स्कूल के शिक्षक पाठक दामोदर के घर जाकर प्रिन्सिपल की बुराई करते है । इस पर मंजुल दोमादर से कहता है कि पाठक प्रिन्सिपल की बुराई इसलिए कर रहा था कि वे इसे न पढ़ाने के कारण कई बार डाँट चुके हैं । और दोनों अलग-अलग राजनीतिक दलों से जुड़े हुए है - **"दोनों के सम्बन्ध ऊपर के नेताओं से हैं । स्थानीय नेताओं और प्रभावशाली लोगों से भी इनके अलग-अलग तरह के समीकरण है । यह पाठक प्रिंसिपल को हटाकर प्रिन्सिपल होना चाहता है और प्रिन्सिपल इसे यहाँ से हटाना चाहते हैं । पूरा स्टाफ प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न तरीके से इन दो दलों में बँट गया है और बच्चों की पढ़ाई आहत हो रही है ।"१३**

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि रामदरश मिश्र ने प्रस्तुत उपन्यास में दलित-पीड़ित समाज के वर्तमान समय के विद्रोहात्मक एवं तर्कसंगत विचार का यथार्थ चित्रण किया

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

गया है । दलित जीवन की विभिन्न समस्याओं के साथ-साथ मिश्र जी ने दलित समाज के उत्कर्ष को भी उजागर किया है । 'बीस बरस' के सन्दर्भ में दलित चेतना के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रूप में उभरती चेतना और औपन्यासिक शिल्प का विश्लेषण किया गया है । बदलते समय के साथ दलित समाज में आये परिवर्तन की सोच का वास्तविक चित्रण समीक्ष्य उपन्यास की विशिष्ट उपलब्धि है । आलोच्य उपन्यास में चित्रित दलित समाज शोषित, पीड़ित, दबा-कुचला नहीं है, बल्कि शोषण, अन्याय-अत्याचार एवं सवर्ण मानसिकता के खिलाफ आवाज़ उठानेवाला जागृत समाज है । समग्रतः 'बीस बरस' दलित समाज के उत्कर्ष का यथार्थ दस्तावेज है ।

सन्दर्भ -

(१) हिन्दी उपन्यास एवं अंतर्यात्रा - रामदरश मिश्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृ.-96

(२) बीस बरस - रामदरश मिश्र - वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1996, पृ.-39-40

(३) वही, पृ.- 40

(४) वही, पृ.- 87

(५) वही, पृ.- 44

(६) वही, पृ.- 44

(७) वही, पृ.- 45

(८) वही, पृ.- 42

(९) वही, पृ.- 70

(१०)वही, पृ.- 70

(११) वही, पृ.- 99

(१२)वही, पृ.- 24

(१३)वही, पृ.- 125

सम्पर्क : डॉ.अमितभाई एन.पटेल

आसीसटन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

जीएलएस (सद्गुणा एण्ड बी.डी.) कॉलेज फॉर गर्ल्स,

सीटी केम्पस, लालदरवाजा, अहमदाबाद-०१

चलभाष :9925267715/ 9727497201

Email: amitnpatel1682@gmail.com

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X